Unit 05. कान, नाक व गले संबंधी विकार

(Disorders of Ear, Nose and Throat)

Q. मध्य कर्ण प्रदाह क्या है?

इसके प्रकार, कारण, लक्षण, निदान व जटिलताएं क्या हैं?

इसका उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।

What is otitis media?

What are types, causes, clinical features, diagnosis and complications of it.

Write its treatment and nursing management.

अथवा

एक्यूट ओटाइटिस मीडिया के चिन्ह व लक्षण लिखिए।

एक्यूट ओटाइटिस मीडिया का उपचार लिखिए।

What are the sign and symptoms of acute otitis media?
Write the treatment of otitis media.

उत्तर- ओटायटिस मीडिया (Otitis Media)

मध्य कर्ण का संक्रमण एवं प्रदाह होना otitis media कहलाता है। (Otitis media is characterized by infection and inflammation of middle ear).

प्रकार (Types) -

1. तीव्र मध्य कर्ण शोथ (Acute Otitis Media)

इसमें मध्य कर्ण में अचानक से संक्रमण हो जाता है तथा 6 सप्ताह के भीतर स्वतः ही ठीक भी हो जाता है। यह एक कान अथवा दोनों कानों में एक साथ हो सकता है।

2. जीर्ण मध्य कर्ण शोथ (Chronic Otitis Media)

इसमें मध्य कर्ण में बार-बार संक्रमण हो जाता है। यह संक्रमण मध्य कर्ण के अलावा कान की मैस्टॉइड अस्थि एवं टिम्पेनिक मैम्ब्रेन से भी हो सकता है।

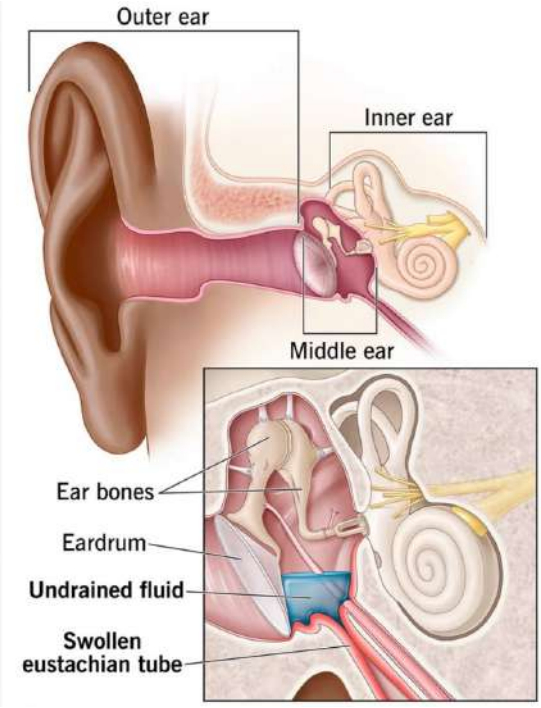

कारण (Causes) -

• लम्बे समय से sinusitis होना

• किसी प्रकार की गांठें होना (Tumors)

• वाइरल संक्रमण (Viral infection)

• Respiratory tract infection जैसे- sinusitis, rhinitis, pharyngitis

• Ryle's tube डालना

• लसिका गांठों का सूजना (Adenoidal edema)

लक्षण (Clinical Features) - Otitis media में निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं-

• कान में तेज दर्द होना (Severe pain in ear)

• कान से बदबूदार स्राव आना (Foul smelling from discharge)

• बुखार (Fever)

• सिरदर्द (Headache)

• सुनने की क्षमता कम होना (Hearing loss)

• भूख न लगना (Anorexia)

• मुँह से बदबू आना (Foul odour from mouth)

• जी घबराना एवं उल्टी होना (Nausea and vomiting)

• कान भरा हुआ अनुभव होना (Fullness in ear)

• चबाने में दर्द होना (Painful mastication)

निदान (Diagnosis) -

• Physical examination

• लक्षणों की उपस्थिति की जांच

• Audiometry

• Otoscopic examination

• Otorrheal discharge culture

• Mastoid X-ray

• CT Scan

जटिलताएँ (Complications) -

• Abscess formation

• Sigmoid sinus

• Septicemia

• Juglar vein thrombosis

• Meningitis

• Labyrinthitis

• Otitis external or internal

• Deafness

उपचार (Treatment)

चिकित्सीय प्रबंधन (Medical Management) -

1. रोगी को analgesics दिए जाते हैं। जैसे- aspirin, acetaminophen

2. रोगी को antibiotic ear drops instillation के लिए दिए जाते हैं जैसे- moxifloxacin, erythromycin, neomycin आदि।

3. रोगी को नेजल स्प्रे या oral decongestants भी दिए जाते हैं।

4. Candida infection होने पर nystatin एवं 2% सेलिसिलिक अम्ल ointment का application भी किया जाता है।

सर्जिकल प्रबंधन (Surgical Management) -

रोगी की गंभीर स्थिति में आवश्यकतानुसार निम्न शल्य चिकित्सा भी की जाती हैं-

• Myringotomy

• Tympanoplasty

• Mastoidectomy

• Adenoidectomy

• Excision of cholesteatoma

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

शल्य-चिकित्सा पूर्व नर्सिंग देखभाल (Pre-operative Nursing Care)

1. रोगी एवं परिवारजनों को रोग के बारे में व उसकी की जाने वाली सर्जरी के बारे में समझाना चाहिए।

2. रोगी व परिवारजनों को मनोवैज्ञानिक सहारा प्रदान करना चाहिए।

3. रोगी के अस्पताल में भर्ती होने पर जैविक चिन्हों की जांच की जानी चाहिए।

4. रोगी को शल्यचिकित्सा के लिए तैयार करना चाहिए।

शल्य-चिकित्सा के पश्चात् नर्सिंग देखभाल (Post-operative Nursing Care) -

1. रोगी को लेटरल पॉजिशन प्रदान करनी चाहिए व ऑपरेटिव कान को ऊपर की तरफ रखना चाहिए।

2. दर्द के लिए चिकित्सक आदेशानुसार analgesic देना चाहिए।

3. रोगी को आरामदायक बिस्तर व स्थिति प्रदान करनी चाहिए।

4. Aseptic तकनीक द्वारा कान की ड्रैसिंग करनी चाहिए।

5. सर्जरी स्थल का निरंतर निरक्षण करना चाहिए व रक्तस्राव आदि हो तो चिकित्सक को सूचित करना चाहिए।

6. रोगी को निम्न शिक्षा प्रदान करनी चाहिए-

• सभी दवाईयां निर्देशानुसार सही समय पर लें।

• छींकते व खांसते समय मुंह खुला रखें।

• भारी सामान उठाने एवं खींचने से बचें।

• सर्जरी वाले कान को पानी के संपर्क से बचाएं, नहाते समय कान में ईयर प्लग लगाएं।

• जोर स न हंसें।

• रोगी के पोषण स्तर में सुधार करें।

• चिकित्सक को नियत समय पर आकर दिखाएं।

Answer- Otitis Media:

Infection and inflammation of the middle ear is called otitis media. (Otitis media is characterized by infection and inflammation of the middle ear).

Types -

1. Acute Otitis Media:

In this, infection occurs suddenly in the middle ear and gets cured on its own within 6 weeks. This can happen in one ear or both ears simultaneously.

2. Chronic Otitis Media:

In this, there is repeated infection in the middle ear. Apart from the middle ear, this infection can also occur from the mastoid bone and tympanic membrane of the ear.

Causes -

• chronic sinusitis

• Having any kind of lumps (Tumors)

• Viral infection

• Respiratory tract infection such as sinusitis, rhinitis, pharyngitis

• Inserting Ryle's tube

• Swelling of lymph nodes (Adenoidal edema)

Symptoms (Clinical Features) – Following symptoms

occur in Otitis media-

• Severe pain in ear

• Foul smelling discharge from the ear

• Fever

• Headache

• Hearing loss

• Loss of appetite (Anorexia)

• Foul odor from mouth

• Nausea and vomiting

• Fullness in ear

• Painful mastication

Diagnosis -

• Physical examination

• Checking for presence of symptoms

• Audiometry

• Otoscopic examination

• Otorrheal discharge culture

• Mastoid X-ray

• CT Scan

Complications -

• Abscess formation

• Sigmoid sinus

• Septicemia

• Juggler vein thrombosis

• Meningitis

• Labyrinthitis

• Otitis external or internal

• Deafness

• Treatment

Medical Management -

1. Analgesics are given to the patient. Like- aspirin, acetaminophen

2. The patient is given antibiotic ear drops for instillation like moxifloxacin, erythromycin, neomycin etc.

3. The patient is also given nasal spray or oral decongestants.

4. In case of Candida infection, nystatin and 2% salicylic acid ointment is also applied.

Surgical Management –

In the serious condition of the patient, the following surgeries are also performed as per requirement-

• Myringotomy

• Tympanoplasty

• Mastoidectomy

• Adenoidectomy

• Excision of cholesteatoma

Nursing Management -

Pre-operative Nursing Care

1. The patient and family members should be explained about the disease and the surgery to be performed.

2. Psychological support should be provided to the patient and family members.

3. Biological signs should be checked when the patient is admitted to the hospital.

4. The patient should be prepared for surgery.

Post-operative Nursing Care -

1. The patient should be provided lateral position and the operative ear should be kept upwards.

2. Analgesics should be given for pain as per doctor's orders.

3. The patient should be provided with comfortable bed and position.

4. Ear dressing should be done using aseptic technique.

5. The surgery site should be continuously monitored and if bleeding etc. occurs, the doctor should be informed.

6. The following education should be provided to the patient-

• Take all medicines at the right time as directed.

• Keep your mouth open while sneezing and coughing.

• Avoid lifting and pulling heavy items.

• Protect the surgical ear from contact with water, wear

ear plugs while bathing.

• Don't laugh loudly.

• Improve the nutritional level of the patient.

• Come and see the doctor at the appointed time.

Q. बहरापन क्या है?

बहरेपन के प्रकार, कारण, लक्षण, निदान एवं प्रबंधन क्या हैं?

What is deafness?

What are the types, causes, symptoms, diagnosis and management of deafness?

उत्तर- बहरापन (Deafness)

व्यक्ति के सुनने में कठिनाई या बिल्कुल भी न सुन पाना अथवा श्रवण का आंशिक य पूर्णतः ह्रास होना बहरापन कहलाता है।

प्रकार (Types) - बहरापन दो प्रकार का होता है-

1. चालक बहरापन (Conductive Deafness)-

इसमें आवाज या ध्वनि आंतरिक कान तक नहीं पहुंच पाती है। यह मुख्यतः कर्ण अस्थियों (ear bone) में अवरोध उत्पन्न होने से होता है।

2. तंत्रिकीय संवेदी बहरापन (Sensory Neural Deafness)

इसमें आंतरिक कान में तंत्रिका कार्यों में व्यवधान पैदा होने से बहरापन हो जाता है।

यह मुख्यतः VIII cranial nerve एवं central auditory pathway में विकृति के कारण उत्पन्न होता है। यह अधिकांशतः जन्मजात होता है।

कारण (Causes) - बहरेपन के निम्न कारण हो सकते हैं-

• जन्मजात (Congenital)

• कान में बाहरी वस्तु (Foreign body) का होना

• पर्दा फटना (Tympanic perforation)

• संक्रमण (Infection) जैसे- otitis, mastoiditis

• Middle ear bone dislocation

• अधिक आयु में (In old age)

• किसी ट्यूमर के कारण (Due to tumor)

• Labyrinthitis

• मेनियर रोग

• मस्तिष्क में चोट (Trauma in brain)

लक्षण (Clinical Features) बहरेपन के निम्न लक्षण होते हैं-

• किसी बात को समझ न पाना।

• सुनने के लिए कान को पास लाना।

• असमंजस में रहना।

• बार-बार कहने के लिए कहना।

• निर्देशों का सही पालन न करना।

• चिंता (Anxiety)

• अवसाद (Depression)

निदान (Diagnosis) -

• Physical examination

• लक्षणों की उपस्थिति की जाँच

• Audiometry

• Blood investigation

• CT Scan

• MRI

• X-Ray

• Histopathological examination

प्रबंधन (Treatment)

1. यदि अस्थायी बहरापन है तो इसके कारण का उपचार किया जाता है।

2. यदि आवश्यक है तो hearing machine प्रदान की जाती है।

3. किसी प्रकार का संक्रमण है तो इसका उपचार किया जाता है।

4. शल्य चिकित्सा - आवश्यकतानुसार निम्न सर्जरी की जाती हैं-

• Tympanoplasty

• Mastoidectomy

• Pus drainage

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. यदि संभव हो तो hearing aid का उपयोग करने के लिए रोगी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

2. यदि रोगी साक्षर हो तो समस्याएँ एवं निर्देश लिखकर बताने चाहिए।

3. यदि रोगी निरक्षर है तो वस्तुएँ दिखाकर या चित्र दिखाकर समझाना चाहिए।

4. रोगी के परिवार को स्नेहपूर्वक व्यवहार के लिए कहना चाहिए।

5. रोगी को आवश्यक audio-visual aid का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. रोगी एवं परिवारजनों से सर्जरी के लिए लिखित सहमति प्राप्त करनी चाहिए।

7. रोगी को ऑपरेशन से होने वाले लाभ व जटिलताओं को समझाना चाहिए।

8. रोगी के ऑपरेशन के उपरांत उसे सभी दवाईयां चिकित्सक आदेशानुसार देनी चाहिए जैसे antiemetics, antipyretics, mild laxatives आदि।

9. Aseptic technique द्वारा नियमित समय पर ड्रैसिंग करनी चाहिए।

10. रोगी के पोषण स्तर को सामान्य बनाए रखना चाहिए।

उपरोक्त प्रबंधन के अलावा नर्स का दायित्व है कि वह समाज में लोगों को बहरेपन से बचाने के लिए उन्हें शिक्षित करे।

नर्स लोगों को बहरेपन से बचाव व बहरे लोगों को उनके अधिकार के बारे में निम्न सलाह दे सकती है-

• चिकित्सा कैम्प में hearing screening करके रोगियों की पहचान करना व शुरुआती लक्षण ढूँढ़ना।

• कान के भीतर किसी भी प्रकार की बाहरी वस्तु को न डालना।

• तेज आवाज में काम करने वाले श्रमिकों को बताना कि ear plugs का इस्तेमाल करें।

• सिर की चोट से बचने के लिए हेलमेट व सुरक्षा संबंधी उपायों का उचित इस्तेमाल करना।

• बच्चों के कान में होने वाले संक्रमण का पता लगाना।

• अगर कान में किसी भी प्रकार की दवाई डालने पर उसके पड़ने वाले

विपरीत प्रभावों के बारे में जानकारी देना।

• रोगी को बधिर पुनर्वास कार्यक्रम से जोड़ना।

• रोगी को वार्तापाल व संप्रेषण के तरीकों के बारे में समझाना।

• बधिर यंत्र को इस्तेमाल करने के बारे में बताना।

• आर्थिक रूप से कमजोर रोगियों को विभिन्न सरकारी सहायता प्राप्त समूहों व सराकारी योजनाओं द्वारा दी जाने वाली सहायता के बारे में जानकारी देना।

Answer- Deafness: Difficulty in hearing or inability of a person to hear at all or partial or complete loss of hearing.

Complete loss is called deafness.

Types – There are two types of deafness-

1. Conductive Deafness –

In this, sound does not reach the inner ear. This mainly happens due to blockage in the ear bones.

2. Sensory Neural Deafness:

Disruption in nerve functions in the inner ear.Deafness occurs from birth. It mainly arises due to pathology in VIII

cranial nerve and central auditory pathway. It is mostly congenital.

Causes – Deafness can have the following causes:

- Congenital
- Foreign body in the ear
- Tympanic perforation
- Infections such as otitis, mastoiditis
- Middle ear bone dislocation
- In old age
- Due to tumor
- Labyrinthitis
- meniere's disease
- Trauma in brain

Clinical Features:

Deafness has the following symptoms:

- Not being able to understand anything.
- Bringing the ear closer to listen.

• To be confused.

• Asking to be said again and again.

• Not following instructions properly.

• Anxiety

• Depression

Diagnosis -

• Physical examination

• Checking for presence of symptoms

• Audiometry

• Blood investigation

• CT Scan

• MRI

• X-Ray

• Histopathological examination

Management

1. If there is temporary deafness then its cause is treated.

2. Hearing machine is provided if necessary.

3. If there is any kind of infection, it is treated.

4. Surgery – The following surgeries are performed as per requirement-

• Tympanoplasty

• Mastoidectomy

• Pus drainage

Nursing Management -

1. The patient should be encouraged to use hearing aids if possible.

2. If the patient is literate then problems and instructions should be given in writing.

3. If the patient is illiterate then the patient should be explained by showing objects or pictures.

4. The patient's family should be asked to behave affectionately.

5. The patient should be encouraged to use necessary audio-visual aids.

6. Written consent for surgery should be obtained from the

patient and family members.

7. The benefits and complications of the operation should be explained to the patient.

8. After the operation of the patient, he should be given all the medicines as per the doctor's orders like antiemetics, antipyretics, mild laxatives etc.

9. Dressing should be done regularly using aseptic technique.

10. The nutritional level of the patient should be maintained normal.

Apart from the above management, it is the responsibility of the nurse to educate the people in the society to save them from deafness.

The nurse can give the following advice to people about the prevention of deafness and their rights to deaf people:

• To identify patients and find initial symptoms by doing hearing screening in medical camps.

• Do not insert any kind of foreign object inside the ear.

• Tell workers working at loud noises to use ear plugs.

• Proper use of helmet and safety measures to avoid head injury.

• Detecting ear infections in children.

• To give information about the adverse effects of putting any kind of medicine in the ear.

• Linking the patient to a deaf rehabilitation program.

• To explain to the patient about the conversation partner and methods of communication.

• Explaining how to use hearing aids.

• To provide information about the assistance provided by various government aided groups and government schemes to economically weaker patients.

Q. मैनियर रोग किसे कहते हैं? इसके कारण, लक्षण, निदान एवं प्रबंधन लिखिए।

What is meniere's disease? Write its causes, symptoms, diagnosis and management.

उत्तर- मैनियर रोग (Meniere's Disease)

यह एक रोग है जिसमें अंत:कर्ण (internal ear) में भरे endolymph की मात्रा असंतुलित हो जाती है।

इससे तेज चक्कर आना (severe vertigo), धीरे-धीरे सुनाई देना बंद होना

(hearing loss), व कानों में घंटियां बजना (tinnitus) जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं।

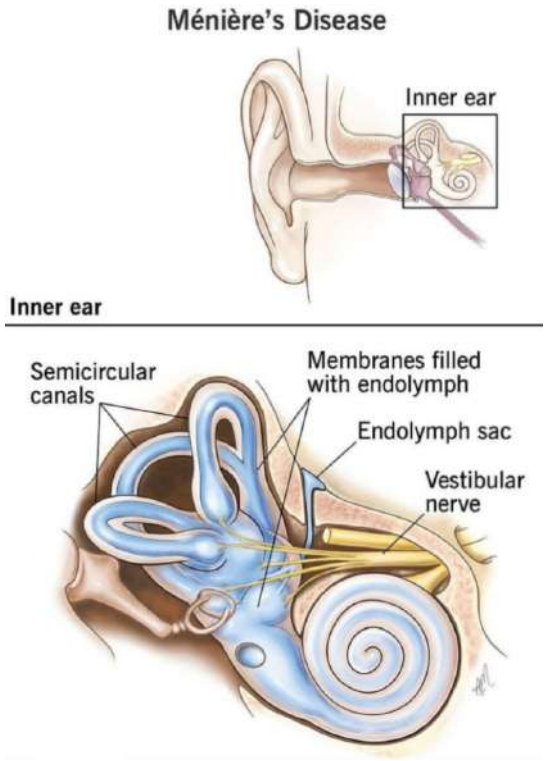

कारण (Etiology)

• स्वायत्त तंत्रिका तंत्र विकार (Autonomic nervous system dysfunctions)

• अति संवेदनशील (Hypersensitivity)

• मासिक धर्म से पहले सूजन (Premenstrual edema)

• अंत:कर्ण की रक्त वाहिनियों में अस्थाई constriction होना।

• गुर्दा रोग (Kidney disease)

• हाइपोथॉयरॉडिज्म (Hypothyroidism)

लक्षण (Clinical Features) इसमें तीन मुख्य लक्षण उत्पन्न होते हैं-

• तेज चक्कर आना (Severe vertigo)

• तंत्रिका संवेदी बहरापन (Sensorineural hearing loss)

• कान में घंटी बजना (Tinnitus)

अन्य लक्षण-

• कान भरा हुआ लगना (Fullness in air)

• जी घबराना एवं उल्टी होना (Nausea and vomiting)

• चक्कर आना (Giddiness)

• अत्यधिक पसीना आना (Diaphoresis)

• आँखों में अनैच्छिक गति (Nystagmus)

• संतुलन बिगड़ना एवं गिरना (Imbalance and falling)

• निर्जलीकरण (Dehydration)

निदान (Diagnosis) -

• लक्षणों की उपस्थिति की जाँच

• Blood investigation

• Audiogram

• Electronystagmography (ENG)

• Electrochocleography

• X-ray

• CT-Scan

चिकित्सीय प्रबंधन (Medical Management) -

1. रोगी को चक्कर आने के दौरान atropine एवं epinephrine दी जाती है।

2. रोगी को antihistamine एवं mild sedatives भी दिए जाते हैं जैसे- dimenhydrinate, phenobarbital, diazepam

3. रोगी को अन्य दवाईयां भी दी जाती हैं जैसे- diphenhydramine, meclizine, diazepam

4. Oedema को कम करने के लिए diuretics देना चाहिए।

5. रोगी को भोजन में नमक की मात्रा कम कर देनी चाहिए।

6. रोगी को तरल पदार्थ की मात्रा भी कम कर देनी चाहिए।

सर्जिकल प्रबंधन (Surgical Management) -

1. यदि drug therapy लाभदायक नहीं होती है तो शल्य चिकित्सा की जाती है।

2. रोगी में प्रभावित labyrinth को हटा दिया जाता है इसे labyrinthectomy कहा जाता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी से शांति से वार्तालाप करने का प्रयास करना चाहिए।

2. रोगी की शंकाओं का शांतिपूर्वक समाधान करना चाहिए एवं प्रश्नों का यथा संभव सही उत्तर देना चाहिए।

3. रोगी को चिकित्सक द्वारा निर्देशित दवाईयां सही समय पर लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

4. रोगी को drop instillation का सही तरीका बताना चाहिए।

5. ऑपरेशन के बाद होने वाली जटिलताओं व सावधानियों के बारे में रोगी को जानकारी प्रदान करना चाहिए।

6. रोगी को कम नमक युक्त भोजन लेने की सलाह देनी चाहिए।

7. रोगी को मानसिक सहारा देना चाहिए।

Answer- Meniere's Disease:

This is a disease in which the amount of endolymph filled in the internal ear becomes unbalanced. This causes symptoms like severe vertigo, gradual hearing loss, and ringing in the ears (tinnitus).

Etiology

• Autonomic nervous system dysfunctions

• Hypersensitivity

• Premenstrual edema

• Temporary constriction in the blood vessels of the inner ear.

• Kidney disease

• Hypothyroidism

Symptoms (Clinical Features) Three main symptoms arise in this-

• Severe vertigo

• Sensorineural hearing loss

• Ringing in the ears (Tinnitus)

Other symptoms-

• Fullness in air

• Nausea and vomiting

• Giddiness

• Excessive sweating (Diaphoresis)

• Involuntary movement of eyes (Nystagmus)

• Imbalance and falling

• Dehydration

Diagnosis -

• Checking for presence of symptoms

• Blood investigation

• Audiogram

• Electronystagmography (ENG)

• Electrochocleography

• X-ray

• CT-Scan

Medical Management -

1. Atropine and epinephrine are given to the patient during dizziness.

2. Antihistamines and mild sedatives are also given to the patient like- dimenhydrinate, phenobarbital, diazepam.

3. Other medicines are also given to the patient like-

diphenhydramine, meclizine, diazepam.

4. Diuretics should be given to reduce edema.

5. The patient should reduce the amount of salt in the food.

6. The patient should also reduce the amount of fluid consumed.

Surgical Management -

1. If drug therapy is not beneficial then surgery is done.

2. The affected labyrinth is removed from the patient, this is called labyrinthectomy.

Nursing Management

1. One should try to talk to the patient peacefully.

2. The patient's doubts should be resolved peacefully and questions should be answered as accurately as possible.

3. The patient should be encouraged to take the medicines as directed by the doctor at the right time.

4. The patient should be told the correct method of drop instillation.

5. Information should be provided to the patient about the

complications and precautions that may occur after the operation.

6. The patient should be advised to take food containing less salt.

7. The patient should be given mental support.

Q. लैबिरिन्धाइटिस क्या है?

इसके कारण, लक्षण, निदान व जटिलताएं लिखिए।

लैबिरिन्थाइटिस का प्रबंधन समझाइए।

What is labyrinthitis?

Write its causes, symptoms, diagnosis and complications.

Describe management of labyrinthitis.

उत्तर- लैबिरिन्याइटिस (Labyrinthitis)

यह अंत: कर्ण में labyrinth के संक्रमण एवं प्रदाह की स्थिति है।

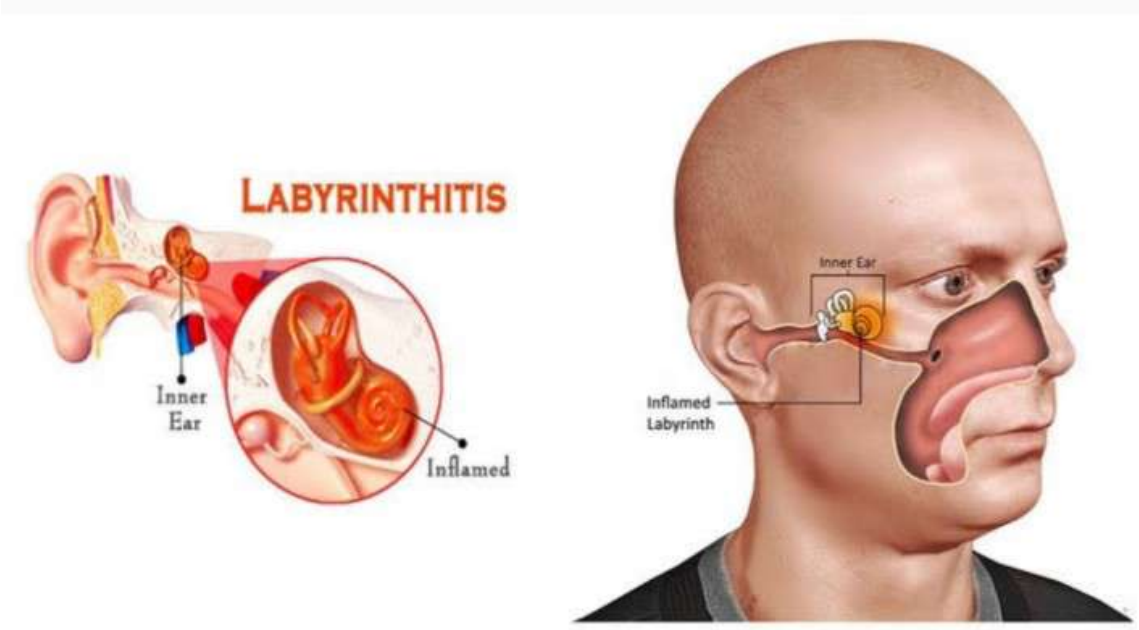

कारण (Etiology) -

• Pathogen जैसे- haemophilus influenzae, staphylococci, diplococcus pneumoniae

• चोट लगना (Ear trauma)

• मेनिन्जाइटिस (Meningitis)

• कर्ण प्रदाह (Otitis)

• दवाओं का दुष्प्रभाव (Drug toxicity)

• मैस्टॉइड प्रदाह (Mastoiditis)

लक्षण (Clinical Features) -

• चक्कर आना (Vertigo)

• श्रवण क्षमता कम होना (Hearing loss)

• चलते समय गिरना (Falling while walking)

• प्रभावित कान की तरफ आँखों में झटका लगना

• जी घबराना एवं उल्टी होना (Nausea and vomiting)

• बुखार (Fever)

• कान में दर्द होना (Ear pain)

निदान (Diagnosis) -

• Physical examination

• लक्षणों की उपस्थिति की जांच

• Ear discharge culture

• CT Scan

• Blood investigation

• जटिलताएँ (Complications)

• मस्तिष्क में घाव होना (Brain abscess)

• मेनियर रोग (Menire's disease)

• बहरापन (Deafness)

• तेज चक्कर आना (Severe vertigo)

उपचार (Treatment) -

1. रोगी में चक्कर के उपचार के लिए औषधि दी जाती है जैसे- prochlorperazine (stemetil)

2. रोगी को एन्टीबॉयोटिक दी जाती हैं जैसे- ceftriaxone, amikacin, ciprofloxacin

3. Endolymph secretion को घटाने के लिए meclizine (antivert) दी जाती है इससे चक्कर नियंत्रित होते हैं।

4. रोगी को उल्टी व मितली को रोकने के लिए antiemetics औषधि दी

जाती हैं।

सर्जिकल प्रबंधन (Surgical Management)

1. यदि drug therapy प्रभावी नहीं होती है तो infected secretion का drainage किया जाता है।

2. यदि आवश्यक हो तो cholesteatoma का surgical excision भी किया जाता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी से दर्द की तीव्रता पूछकर नोट करनी चाहिए।

2. चिकित्सक द्वारा निर्देशित drops instillation नियमित रूप से किया जाता है।

3. रोगी को ice pack apply करने के लिए भी कहा जा सकता है।

4. रोगी को vertigo के कारण चोट भी लग सकती है। इसके लिए सुरक्षा नियमों का पालन करना चाहिए।

Answer- Labyrinthitis: This is a condition of infection and inflammation of the labyrinth in the inner ear.

Etiology -

• Pathogen जैसे- haemophilus influenzae, staphylococci, diplococcus pneumoniae

• Ear trauma

• Meningitis

• Otitis

• Side effects of medicines (Drug toxicity)

• Mastoiditis

Symptoms (Clinical Features) -

• Vertigo

• Hearing loss

• Falling while walking

• Eye twitching on the affected ear

• Nausea and vomiting

• Fever

• Ear pain

Diagnosis -

• Physical examination

• Checking for presence of symptoms

• Ear discharge culture

• CT Scan

• Blood investigation

Complications

• Brain abscess

• Meniere's disease

• Deafness

• Severe vertigo

Treatment -

1. Medicines are given for the treatment of vertigo in the patient like- prochlorperazine (stemetil)

2. Antibiotics are given to the patient like ceftriaxone, amikacin, ciprofloxacin.

3. Meclizine (antivert) is given to reduce endolymph secretion, this controls dizziness.

4. Antiemetics are given to the patient to prevent vomiting

and nausea.

Surgical Management

1. If drug therapy is not effective then drainage of the infected secretion is done.

2. If necessary, surgical excision of cholesteatoma is also done.

Nursing Management

1. The intensity of pain should be asked and noted by the patient.

2. Drops instillation is done regularly as directed by the doctor.

3. The patient may also be asked to apply ice pack.

4. The patient may also get injured due to vertigo. For this, safety rules should be followed.

Q. फेरिंजाइटिस क्या है? इसके कारण, लक्षण, निदान एवं प्रबंधन लिखिए।

What is pharyngitis? Write its causes, diagnosis,

symptoms and management.

उत्तर-फेरिंजाइटिस (Pharyngitis)

प्रसनी (pharynx) के प्रदाह (inflammation) की स्थिति को फेरिन्जाइटिस कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है- तीव्र (acute) व जीर्ण (chronic)।

कारण (Etiology) -

• Pathogen जैसे- rhinovirus, coronavirus, adenovirus, influenza

• धूल भरा वातावरण (Dusty environment)

• धूम्रपान (Smoking)

• तंबाकू चबाना (Tobacco chewing)

• मद्यपान (Alcoholism)

• एलर्जी (Allergy)

• संक्रमित भोजन (Infected food)

• ऊपरी श्वसन संक्रमण (URTI)

लक्षण (Clinical Features)

• गले में दर्द (Sore throat)

• निगलने में कठिनाई (Dysphagia)

• लार निगलना अधिक दर्द युक्त होता है।

• गले में भार अनुभव होना (Lump feeling in throat)

• निगलने की अधिक इच्छा (More urge to swallow)

• बुखार (Fever)

• सिरदर्द (Headache)

• बेचैनी (Restlessness)

• नाक बहना (Rhinorrhea)

निदान (Diagnosis) -

• History collection

• Physical examination

• Laryngoscopy

• Throat swab culture

• Blood investigations

चिकित्सीय प्रबंधन (Medical Management)

1. रोगी को एन्टीबॉयोटिक्स दी जाती हैं जैसे cefotaxime, ciprofloxin, amoxicillin आदि।

2. रोगी को betadine saline से कुल्ले (gargles) करने के लिए कहा जाता है।

3. रोगी को analgesics एवं antipyretics दिए जाते हैं जैसे- aspirin, ibupropfane

4. रोगी को बोलने से मना करना चाहिए एवं आवश्यकतानुसार स्टीम इनहेलेशन व नेबुलाइजेशन (nebulization) भी किया जाना चाहिए।

5. रोगी को ठंडे व खट्टे पदार्थों का सेवन करने से मना करना चाहिए।

सर्जिकल प्रबंधन (Surgical Management)

1. यदि severe obstruction हो तो सर्जरी भी की जाती है जैसे- tracheostomy, laryngectomy

2. Laryngectomy होने पर कृत्रिम voice synthesizer लगाया जाता है जिससे रोगी बोल सकता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी जब दर्द की शिकायत करता है तो दर्द की तीव्रता व स्थान पूछकर नोट करें।

2. चिकित्सक के आदेशानुसार सभी दर्वाइयां समय पर दें।

3. रोगी को संक्रमण से बचाव या उपचार के लिए एन्टिबायोटिक डॉक्टर के निर्देशानुसार दें।

4. रोगी के शरीर का ताप नियत समय पर नोट करें।

5. रोगी के प्रश्नों का सकारात्मक तरीके से उत्तर देना चाहिए।

6. रोगी यदि oral intake में असमर्थ है तो I.V. fluids administer करने चाहिए।

7. रोगी को पर्याप्त आराम प्रदान करने के लिए शांत एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करना चाहिए।

8. रोगी को fiber-rich diet भी प्रदान करनी चाहिए।

9. किसी भी प्रकार की जटिलता होने पर चिकित्सक को सूचित करना चाहिए।

Answer- Pharyngitis:

The condition of inflammation of the pharynx is called pharyngitis. It is of two types – acute and chronic.

Etiology -

• Pathogen जैसे- rhinovirus, coronavirus, adenovirus, influenza

• Dusty environment

• Smoking

• Tobacco chewing

• Alcoholism

• Allergy

• Infected food

• Upper respiratory infection (URTI)

Clinical Features

• Sore throat

• Difficulty swallowing (Dysphagia)

• Swallowing saliva is more painful.

• Lump feeling in throat

• More urge to swallow

• Fever

• Headache

• Restlessness

• Running nose (Rhinorrhea)

Diagnosis -

• History collection

• Physical examination

• Laryngoscopy

• Throat swab culture

• Blood investigations

Medical Management

1. Antibiotics are given to the patient like cefotaxime, ciprofloxin, amoxicillin etc.

2. The patient is asked to gargle with betadine saline.

3. Analgesics and antipyretics are given to the patient like- aspirin, ibuprofen

4. The patient should be prohibited from speaking and steam inhalation and nebulization should also be done as per requirement.

5. The patient should refuse to consume cold and sour foods.

Surgical Management

1. If there is severe obstruction, surgery is also done like tracheostomy, laryngectomy.

2. After laryngectomy, an artificial voice synthesizer is installed so that the patient can speak

. Nursing Management

1. When the patient complains of pain, note down the intensity and location of the pain.

2. Give all medicines on time as per doctor's orders.

3. Give antibiotics to the patient as directed by the doctor to prevent or treat infection.

4. Note the patient's body temperature at regular intervals.

5. The patient's questions should be answered in a positive manner.

6. If the patient is unable to take oral intake then I.V. fluids should be administered.

7. A calm and safe environment should be provided to provide adequate rest to the patient.

8. The patient should also be provided fiber-rich diet.

9. If any type of complication occurs, the doctor should be informed.

Q. साइनुसाइटिस किसे कहते हैं?

इसके चिह्न व लक्षण क्या हैं?

इसकी जाँच, मेडिकल व सर्जिकल उपचार लिखिए।

What is sinusitis?

What are the signs and symptoms of it?

Write its investigations, medical and surgical treatment.

उत्तर- साइनुसाइटिस (Sinusitis)

नाक में अंदर स्थित sinuses का संक्रमण एवं प्रदाह नासा गुहिका प्रदाह (sinusitis) कहलाता है।

Inflammation of mucous membrane of paranasal sinuses is called sinusitis.

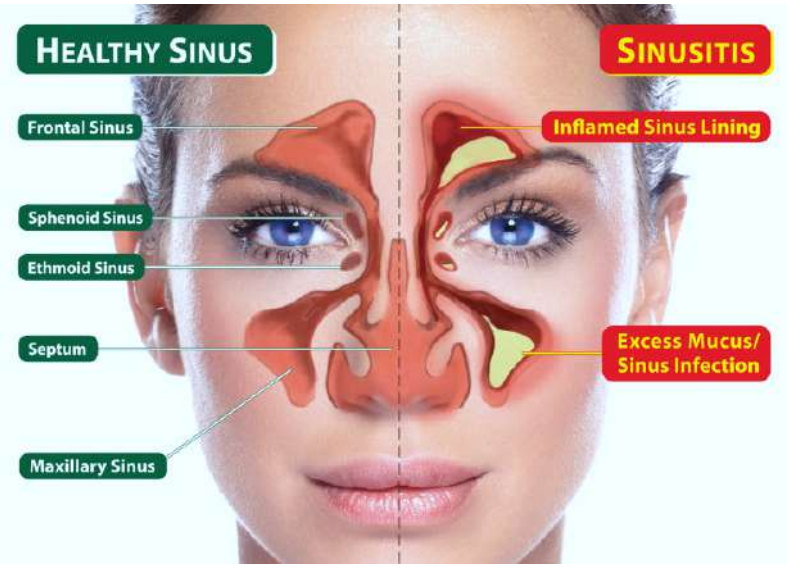

प्रकार (Types)

1. Acute sinusitis - यह कम अवधि के लिए होता है एवं 1-2 सप्ताह में ठीक हो जाता है।

2. Chronic sinusitis यह 3 सप्ताह से भी अधिक समय तक रहता है एवं इससे गंभीर जटिलताएं उत्पन्न हो सकती हैं।

कारण (Etiology) -

• हीमोफिलस इन्फ्लुएंजी संक्रमण (Haemophillus influenzae infection)

• मोरैक्सैला केटारहैलिस संक्रमण (Moraxella catarhalis infection)

• स्ट्रेप्टोकोकाई संक्रमण (Streptococci infection)

• नासापट्ट विकृति (Nasal Septum deviation)

• नाक में पॉलिप होना (Nasal Polyps)

• एलर्जी (Allergy)

• जुकाम होना (Common cold)

• स्टीरिऑड का अधिक सेवन (Chronic use of steroids)

• नाक में नली डालना (Nasogastric intubation)

• रसायन उपचार (Chemotherapy)

लक्षण (Clinical Features)

• नाक बंद होना (Nasal congestion)

• छींके आना (Sneezing)

•बुखार (Fever)

• सिरदर्द (Headache)

• गले में दर्द होना (Sore throat)

• आँखों के चारों ओर सूजन (Periorbital swelling)

,• नाक में दर्द होना (Nasal Pain)

• सूखी खाँसी होना (Non-productive cough)

• थकान (Fatigue)

निदान (Diagnosis) -

• History collection

• लक्षणों की उपस्थिति की जाँच

• Nasal endoscopy

• Antral puncture

• Ultrasonography

• CT Scan

उपचार (Treatment) -

1. रोगी को nasal decongestants दिए जाते हैं।

2. रोगी को steam inhalation दिया जाता है।

3. रोगी को antibiotics दी जाती हैं जैसे- amoxicillin, penicillin, trimethoprin, sulfamethoxazole

4. रोगी को severe sinusitis में corticosteroids एवं antihistamine दिए जाते हैं जैसे- dexona, fexafenadin

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी के जैविक चिन्हों को नोट करना चाहिए।

2. रोगी को पर्याप्त आराम एवं नींद लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए व सोते समय शांत वातावरण होना चाहिए।

3. रोगी को बीमारी के बारे में व उपचार के बारे में उचित जानकारी प्रदान करनी चाहिए।

4. सर्जरी के उपरांत रोगी को रक्तस्त्राव के कारण श्वॉस अवरोध उत्पन्न हो सकता है इसलिए रोगी को फाउलर्स स्थिति में लिटाना चाहिए।

5. सर्जरी के बाद ड्रेसिंग को प्रतिदिन बदलना चाहिए।

6. अंदरुनी नासिका पट्टी को तीन दिन में बदलना चाहिए।

7. रोगी को चिकित्सक आदेशानुसार नियत समय पर दवाईयां देनी चाहिए।

Answer: Sinusitis: Infection and inflammation of the sinuses inside the nose is called sinusitis.

Types

1. Acute sinusitis – It occurs for short duration and gets cured in 1-2 weeks.

2. Chronic sinusitis: It lasts for more than 3 weeks and can cause serious complications.

Etiology -

• Haemophilus influenzae infection

• Moraxella catarhalis infection

• Streptococci infection

• Nasal septum deviation

• Nasal Polyps

• Allergy

• Common cold

• Chronic use of steroids

- Nasogastric intubation
- Chemotherapy

Clinical Features

- Nasal congestion
- Sneezing
- Fever
- Headache
- Sore throat
- Periorbital swelling
- Nasal Pain
- Dry cough (Non-productive cough)
- Fatigue

Diagnosis -

- History collection
- Checking for presence of symptoms
- Nasal endoscopy

• Antral puncture

• Ultrasonography

• CT Scan

Treatment -

1. The patient is given nasal decongestants.

2. Steam inhalation is given to the patient.

3. Antibiotics are given to the patient like- amoxicillin, penicillin, trimethoprin, sulfamethoxazole.

4. In severe sinusitis, corticosteroids and antihistamines are given to the patient like- dexona, fexafenadin.

Nursing Management

1. The biological signs of the patient should be noted.

2. The patient should be encouraged to take adequate rest and sleep and there should be a calm environment while sleeping.

3. Appropriate information should be provided to the patient about the disease and its treatment.

4. After surgery, the patient may face respiratory

obstruction due to bleeding, hence the patient should be made to lie in Fowler's position.

5. Dressing should be changed daily after surgery.

6. The inner nasal strip should be changed every three days.

7. Medicines should be given to the patient at the appointed time as per the doctor's orders.

Q. लैरिंजाइटिस क्या है? इसके कारण, नैदानिक लक्षण एवं मेडिकल, सर्जिकल एवं नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।

What is laryngitis? Write its causes, diagnostic symptoms, medical, surgical and nursing management

उत्तर- लैरिंजाइटिस (Laryngitis)

कंठ में स्वर यंत्र अर्थात् लैरिन्कस (larynx) का संक्रमण एवं प्रदाह laryngitis कहलाता है।

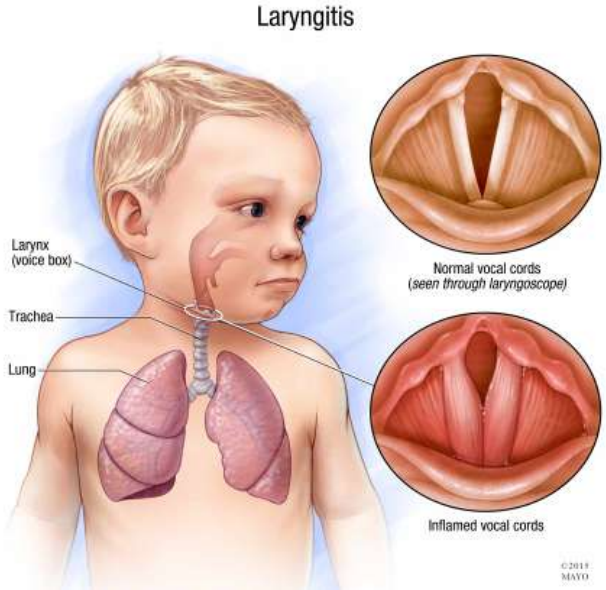

कारण (Etiology) -

• संक्रमण (Infection) जैसे- bacteria, viruses

• आमाशय पदार्थों का backflow (Regurgitation)

• अधिक जोर से लगातार बोलना (Excessive use of voice)

• धुएँ में कार्य करना (Smoke inhalation)

• हानिकारक रसायनों का सेवन (Ingestion of caustic chemicals)

• श्वसन संक्रमण (Respiratory Infections)

• धूम्रपान (Smoking)

• एलर्जी (Allergy)

• मद्यपान (Alcoholism)

लक्षण (Clinical Features) -

• आवाज खराब होना (Hoarseness)

• आवाज न निकलना (Compelete loss of voice)

• निगलते समय दर्द होना (Dysphagia)

• सूखी खाँसी (Dry cough)

• Larynx पर सूजन (Laryngeal edema)

• थकान (Fatigue)

चिकित्सीय प्रबंधन (Medical Management)

1. रोगी को larynx को पूर्ण आराम प्रदान करने की सलाह दें जिसके लिए बोलना बिल्कुल बंद करें, धूम्रपान व मदिरापान का सेवन पूर्णतः बंद करें।

2. यदि bacterial infections है, तो एन्टिबायोटिक दें जैसे- penicillin, erythromycin, azithromycin आदि

3. सर्दी-जुकाम के लिए antihistamine देनी चाहिए जैसे- cetirizine आदि।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. रोगी को नमक के पानी के गरारे करने की सलाह देनी चाहिए।

2. ठण्डे व खट्टे पदार्थों को खाने से बचने की सलाह देनी चाहिए।

3. तरल पदार्थ अधिक लेने की सलाह देनी चाहिए।

4. चिकित्सक आदेशानुसार दवाईयां प्रदान करनी चाहिए।

5. गले की गर्म कपड़े से सिकाई करनी चाहिए।

6. रोगी को steam inhalation लेनी चाहिए।

Answer- Laryngitis is infection and inflammation of the

larynx in the throat Is called laryngitis.

Etiology -

- Infection like bacteria, viruses
- Backflow of gastric contents (Regurgitation)
- Excessive use of voice
- Smoke inhalation
- Ingestion of caustic chemicals
- Respiratory Infections
- Smoking
- Allergy
- Alcoholism

Symptoms (Clinical Features) -

- Hoarseness
- Complete loss of voice
- Pain while swallowing (Dysphagia)
- Dry cough

• Swelling on the larynx (Laryngeal edema)

• Fatigue

Medical Management

1. Advise the patient to provide complete rest to the larynx, for which he should stop speaking completely, stop smoking and drinking alcohol completely.

2. If there is bacterial infection, give antibiotics like penicillin, erythromycin, azithromycin etc.

3. Antihistamine should be given for cold and cough like cetirizine etc.

Nursing Management -

1. The patient should be advised to gargle with salt water.

2. One should be advised to avoid eating cold and sour foods.

3. It should be advised to take more fluids.

4. Medicines should be provided as per doctor's orders.

5. The throat should be wrapped with a warm cloth.

6. The patient should take steam inhalation.

Q. नकसीर से आप क्या समझते हैं?

इसके कारण, लक्षण, निदान, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन समझाइए।

What do you understand with epistaxis?

Describe its causes, symptoms, diagnosis, treatment and nursing management.

उत्तर- नकसीर (Epistaxis)

नाक की अंदरुनी सतह (internal surface) से रक्तस्त्राव होना ही नकसीर (Epistaxis) कहलाती है।

कारण (Etiology)

• अत्यधिक गर्मी होना (Excessive heat)

• उच्च रक्तचाप होना (Hypertension)

• नाक में चोट लगना (Nasal trauma)

• रसायन से एलर्जी (Allergy to chemical)

• आनुवांशिक (Hereditary)

• नासापट विकार (Nasal septum deviation)

• नाक में बाहरी वस्तु का होना

• कुछ रोग जैसे- स्कर्वी (scurvy), हाजकिन रोग (hodgkin's disease), कैंसर (Cancer), विटामिन K की कमी

लक्षण (Clinical Features)

• नाक से ब्लीडिंग होना

• चक्कर आना (Dizziness)

• रक्तचाप कम होना (Hypertension)

• कभी-कभी बेहोशी (Rarely unconsciousness)

निदान (Diagnosis) -

• Physical examination•

• लक्षणों की उपस्थिति की जाँच

• Blood investigation

• आवश्यकतानुसार X-ray, CT Scan इत्यादि।

उपचार (Treatment) -

1. Epistaxis का उपचार इसके कारण के आधार पर किया जाता है।

2. यदि उच्च रक्तचाप है तो तुरन्त antihypertension दवाईयां दी जाती हैं जैसे- amlodipine, nifedipine, atenolol आदि।

3. यदि nasal trauma है तो नाक को अच्छी तरह 5-10 मिनट तक compress किया जाता है।

4. Epistaxis site पर epinephrine से भीगा cotton pad या gauze लगाकर compress किया जाता है।

5. 4% xylocain spray की सहायता से site का पता लगाकर silver nitrate या trichloroacetic acid से या electrocautery से cauterization किया जाता है।

नर्सिंग देखभाल (Nursing Care) -

1. रोगी को नकसीर के समय ऊपर मुँह नहीं करने के लिए कहना चाहिए, रोगी को सीधा बिठाना चाहिए।

2. नाक से ब्लड आने पर नेजल पैकिंग करनी चाहिए।

3. यदि उपलब्ध हो तो ice-pack भी apply किया जाना चाहिए।

4. रोगी का रक्तचाप भी मापना चाहिए।

5. रोगी को पर्याप्त आराम करना चाहिए।

6. अत्यधिक धूप व गर्मी में जाने से बचना चाहिए।

Answer: Epistaxis is bleeding from the internal surface of the nose nose bleeding

Etiology

• Excessive heat

• Having high blood pressure (Hypertension)

• Nasal trauma

• Allergy to chemical

• Hereditary

• Nasal septum deviation

• foreign body in nose

• Some diseases like- scurvy, Hodgkin's disease, cancer, vitamin K deficiency.

Clinical Features

• nose bleeding

• Dizziness

• Low blood pressure (Hypertension)

• Rarely unconsciousness

Diagnosis -

• Physical examination

• Checking for presence of symptoms

• Blood investigation

• X-ray, CT Scan etc. as required.

Treatment -

1. Epistaxis is treated depending on its cause.

2. If there is high blood pressure then antihypertension medicines are immediately given like- amlodipine, nifedipine, atenolol etc.

3. If there is nasal trauma then the nose is thoroughly compressed for 5-10 minutes.

4. Epistaxis site is compressed by applying cotton pad or gauze soaked in epinephrine.

5. With the help of 4% xylocaine spray, the site is identified and cauterization is done with silver nitrate or trichloroacetic acid or electrocautery.

Nursing Care -

1. The patient should be asked not to face upwards during nosebleeds, the patient should be made to sit straight.

2. Nasal packing should be done in case of nose bleeding.

3. If available, ice-pack should also be applied.

4. The patient's blood pressure should also be measured.

5. The patient should take adequate rest.

6. One should avoid exposure to excessive sunlight and heat.

Q. गलप्रदाह या क्विन्सी से आप क्या समझते हैं?

इसके कारण, लक्षण, निदान, जटिलताएं, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन समझाइए।

What do you understand with quinsy?

Describe its causes, symptoms, diagnosis, complications, treatment and nursing management.

उत्तर- क्विन्सी (Quinsy)

गम्भीर संक्रमण या प्रदाह के कारण टॉन्सिल के चारों और बड़ी मात्रा में मवाद एवं फोड़ा (abscess) बनना quinsy कहलाता है, इसे peritonsillar abscess भी कहते हैं।

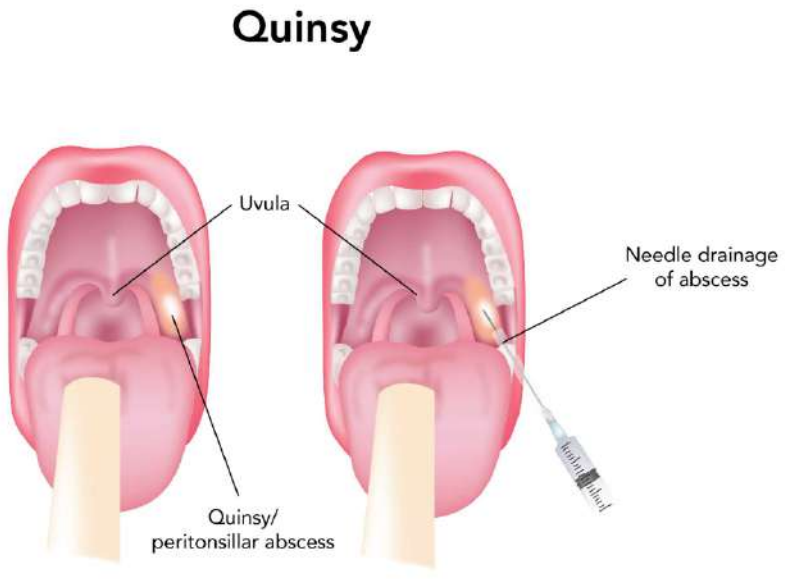

कारण (Etiology) -

• टॉन्सिल्स में संक्रमण (Tonsilitis)

• गलसुआ (Mumps)

• चोट लगना (Trauma)

• संक्रमित भोजन का सेवन (Infected food)

• गम्भीर कुपोषण (Severe malnutrition)

• एडीनॉइडाइटिस (Adenoiditis)

लक्षण (Clinical Features) -

• Tonsils में तीव्र दर्द होना

• निगलने में दर्द होना (Dysphagia)

• चबाने में दर्द होना (Painful mastication)

• सिरदर्द (Headache)

• बुखार (Fever)

• टॉन्सिल के चारों ओर सूजन (Peritonsillar edema)

• मवाद पड़ना (Pusformation)

• कान में दर्द होना (Otalgia)

निदान (Diagnosis) -

• Throat examination

• Throat swab culture

• Blood investigation

• Pus culture

जटिलताएँ (Complications)

• Laryngitis and Pharyngitis

• Septicepmia

• URTI

• Severe abscess

उपचार (Treatment)

1. रोगी को antibiotics दी जाती हैं जैसे- penicillin, amikacin आदि।

2. रोगी को analgesics एवं antipyreties दी जाती हैं जैसे- ibuprofane, aspirin

3. Severe condition में pus aspiration किया जाता है।

4. यदि आवश्यकता हो तो टॉन्सिल एवं समीपवर्ती भाग को काटकर हटा (excision) दिया जाता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी से दर्द की तीव्रता एवं जगह (site) पूछकर नोट किया जाता है।

2. रोगी को आरामदायक स्थिति में रखना चाहिए।

3. रोगी को चिकित्सक आदेशानुसार दवाईयां सही समय पर देनी चाहिए।

4. रोगी का तापमान चैक करना चाहिए।

5. रोगी को गरिष्ठ भोजन लेने से मना करना चाहिए एवं हल्का भोजन लेने के लिए कहना चाहिए।

Answer- Quinsy:

Formation of large amount of pus and abscess around the tonsils due to serious infection or inflammation is called quinsy, it is also called peritonsillar abscess.

Etiology -

• Infection in tonsils (Tonsilitis)

• Mumps

• Trauma

• Consumption of infected food

• Severe malnutrition

• Adenoiditis

Symptoms (Clinical Features) -

• Severe pain in tonsils

• Pain in swallowing (Dysphagia)

• Painful mastication

• Headache

• Fever

• Swelling around the tonsils (Peritonsillar edema)

• Pusformation

• Ear pain (Otalgia)

Diagnosis -

• Throat examination

• Throat swab culture

• Blood investigation

• Pus culture

Complications

• Laryngitis and Pharyngitis

• Septicepmia

• IMPACTS

• Severe abscess

Treatment

1. Antibiotics are given to the patient like penicillin, amikacin etc.

2. The patient is given analgesics and antipyretics like ibuprofen, aspirin.

3. Pus aspiration is done in severe conditions.

4. If necessary, the tonsils and the adjacent part are cut and removed (excision).

Nursing Management

1. The intensity and site of pain is noted by asking the patient.

2. The patient should be kept in a comfortable position.

3. Medicines should be given to the patient at the right time as per the doctor's orders.

4. The patient's temperature should be checked.

5. The patient should refuse to take heavy food and should be asked to take light food.

Q. मैस्टॉयडायटिस क्या है? इसके चिह्न, लक्षण एवं प्री व पोस्ट ऑपरेटिव प्रबंधन को लिखिए।

What is mastoiditis. Describe signs and symptoms, pre and post operative care of mastoiditis.

उत्तर- मैस्टॉयडायटिस (Mastoiditis)

कान के पीछे कर्णमूलास्थि (mastoid process) की कोशिकाओं में होने वाले संक्रमण को कर्णमूलशोथ (Mastoiditis) कहते हैं। कान से जुड़ी मैस्टॉयड अस्थि के antrum का प्रदाह nastoiditis कहलाता है।

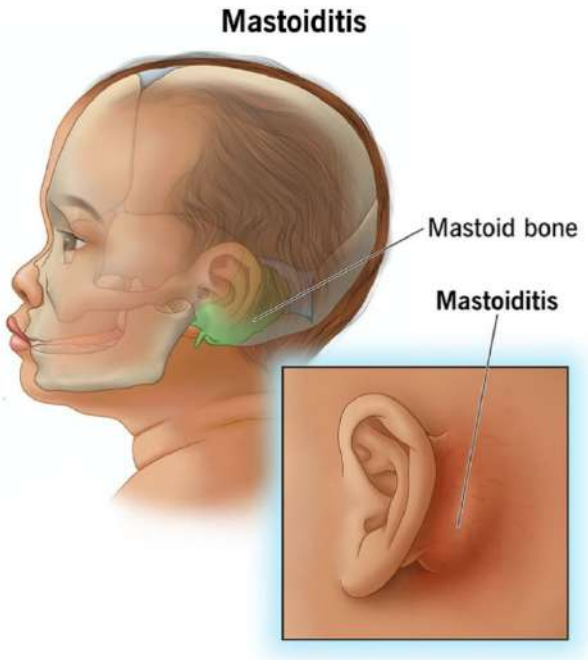

कारण (Etiology) -

• Mastoid bone में चोट लगना।

• बार-बार Otitis होना।

• Eustachian tube में अवरोध होना।

• Allergy होना।

लक्षण (Clinical Features)

• कान के पीछे अस्थि में तेज दर्द (Pain in Mastoid bone)

• Mastoid bone लाल होना (Redness over mastoid bone)

• Mastoid process पर सूजन (Tenderness or edema)

• बुखार (Fever)

• कान से संक्रमित स्त्राव रिसना (Otorrhea)

• श्रवण क्षमता में कमी (Hearing loss)

• उल्टी एवं जी घबराना (Vomiting and Nausea)

निदान (Diagnosis) -

• History collection

• Physical examination

• Blood investigation

• Ear discharge culture

• X-ray

जटिलताएँ (Complications)

• मेनिन्जाइटिस (Meningitis)

• चेहरे पर लकवा (Facial Paralysis)

• मस्तिष्क में घाव होना (Brain abscess)

• Labyrinthitis

चिकित्सीय प्रबंधन (Medical Management) -

1. Antibiotics दी जाती हैं जैसे- ciprofloxacin, gentamycin

2. रोगी को analgesics दिए जाते हैं जैसे- tramadol, diclofenac sodium

सर्जिकल प्रबंधन (Surgical Management) - Severe inflammation में निम्न सर्जरी की जाती है-

1. Myringotomy - Mastoid bone में अगर सीमित क्षति है तो यह सर्जरी की जाती है।

2. Mastoidectomy - इसमें inflammated part को हटा दिया जाता है यह दो प्रकार की होती है-

partial mastoidectomy एवं radical mastoidectomy!

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

शल्य-क्रिया से पूर्व नर्सिंग देखभाल-

1. रोगी की सभी आवश्यक जांचें करायी जाती हैं एवं इन्हें क्रम से जमाकर फाइल तैयार की जाती है।

2. रोगी एवं परिजनों से लिखित सहमति प्राप्त की जाती है।

3. रोगी को सर्जरी से होने वाले लाभ व जटिलताओं के बारे में बताना चाहिए।

4. रोगी को मनोवैज्ञानिक सहारा प्रदान करना।

5. रोगी के सभी जैविक चिन्ह मापे जाते हैं व रोगी को ऑपरेशन थिएटर में भेजा जाता है।

6. ऑपरेशन थिएटर भेजने से पहले रोगी को डॉक्टर द्वारा निर्देशित सभी दवाईयां दी जाती हैं।

7. रोगी को उचित स्थिति प्रदान की जाती है।

शल्य-क्रिया के बाद नर्सिंग देखभाल-

1. रोगी के जैविक चिन्ह की जांच की जाती है।

2. रोगी के सर्जरी स्थल पर haematoma या रक्तस्राव (bleeding) के लिए नियमित अंतराल पर चैक करते हैं।

3. Postoperative order में डॉक्टर द्वारा निर्देशित antibiotic दवाईयां नियमित रूप से रोगी को दी जानी चाहिए।

4. रोगी को आवश्यकतानुसार अन्य दवाईयां दी जाती हैं जैसे- antiemetics, antipyretics, antacids आदि।

5. ऑपरेशन के 6 घंटे बाद पानी, उसके कुछ घंटे बाद तरल भोजन दे सकते हैं। ठोस भोजन दो दिन बाद शुरू किया जा सकता है।

6. Suture या clip removal के बारे में रोगी को बताना चाहिए।

7. आवश्यकतानुसार antihistamine दवाईयां देनी चाहिए।

8. रोगी को आरामदायक स्थिति व शांत वातावरण में रखना चाहिए।

9. रोगी को नियत समय पर डॉक्टर को दिखाने आने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

Answer- Mastoiditis:

The infection occurring in the cells of the mastoid process behind the ear is called Mastoiditis.

Etiology -

• Injury to mastoid bone.

•Frequent occurrence of Otitis.

• Blockage in Eustachian tube.

• Having allergies.

Clinical Features

• Pain in Mastoid bone

• Redness over mastoid bone

• Tenderness or edema on the mastoid process

• Fever

• Otorrhea

• Hearing loss

• Vomiting and Nausea

Diagnosis -

• History collection

• Physical examination

• Blood investigation

• Ear discharge culture

• X-ray

Complications

• Meningitis

• Facial Paralysis

• Brain abscess

• Labyrinthitis

Medical Management -

1. Antibiotics are given like- ciprofloxacin, gentamicin

2. Analgesics are given to the patient like- tramadol, diclofenac sodium.

Surgical Management – In severe inflammation the following surgeries are performed-

1. Myringotomy – If there is limited damage in the mastoid bone then this surgery is done.

2. Mastoidectomy - In this the inflamed part is removed. It

is of two types - partial mastoidectomy and radical mastoidectomy.

Nursing Management

Preoperative nursing care-

1. All necessary tests of the patient are done and a file is prepared by collecting them in sequence.

2. Written consent is obtained from the patient and family.

3. The patient should be informed about the benefits and complications of surgery.

4. To provide psychological support to the patient.

5. All the biological signs of the patient are measured and the patient is sent to the operation theatre.

6. Before sending to the operation theatre, the patient is given all the medicines as directed by the doctor.

7. The patient is provided with proper position.

Nursing care after surgery-

1. The biological signs of the patient are examined.

2. The patient is checked at regular intervals for

hematoma or bleeding at the surgery site.

3. Antibiotic medicines should be given to the patient regularly as directed by the doctor in post-operative order.

4. Other medicines are given to the patient as per requirement like antiemetics, antipyretics, antacids etc.

5. Water can be given 6 hours after the operation, liquid food can be given a few hours after that. Solid food can be started after two days.

6. The patient should be informed about suture or clip removal.

7. Antihistamine medicines should be given as per requirement.

8. The patient should be kept in a comfortable position and calm environment.

9. The patient should be encouraged to visit the doctor at the appointed time.

Q. टॉन्सिलाइटिस क्या है? इसके कारण, लक्षण, उपचार एवं प्री व पोस्ट ऑपरेटिव नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।

What is tonsilitis. Write down the causes, clinical features, treatment and pre and post operative care of tonsilitis.

उत्तर- टॉन्सिलाइटिस (Tonsilitis) मुख गुहा के पिछले भाग (oropharynx) में स्थित टॉन्सिल में संक्रमण द्वारा प्रदाह व सूजन ही टॉन्सिलाइटिस कहलाता है।

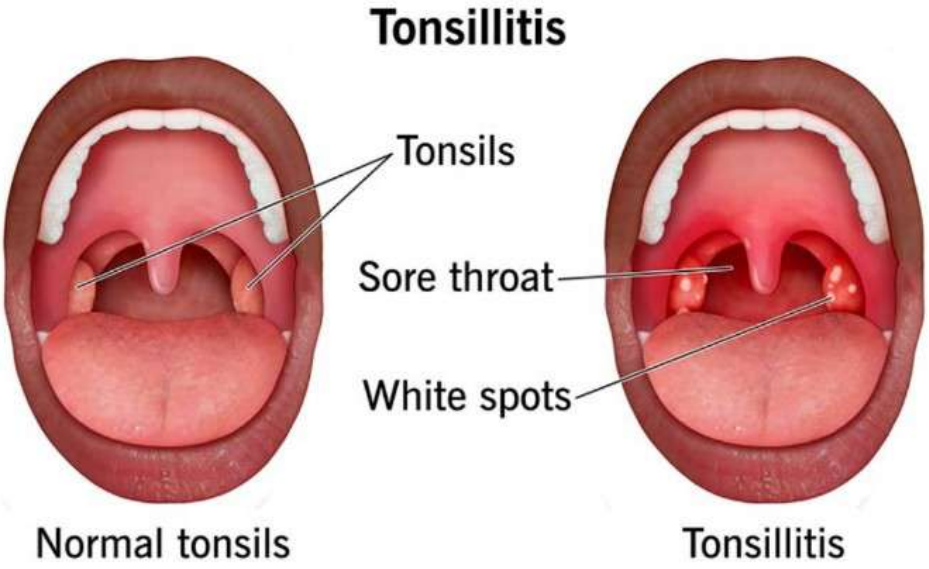

कारण (Causes)

1. Hemolytic streptococci द्वारा
2. Staphylococci द्वारा
3. Pneumococci द्वारा
4. Influenza वायरस द्वारा
5. ऊपरी श्वसन तंत्र संक्रमण
6. प्रदूषित वायु व भोजन

लक्षण (Clinical Features)

1. गले में खराश (Sore throat)

2. निगलने में दर्द (Dysphagia)

3. बुखार (Fever)

4. बदन दर्द (Bodyache)

5. जीभ पर सफेद स्त्राव आना (White coated tongue)

6. सर्दी लगना व कंपकंपी आना (Chils and shivering)

7. गले की लसिका ग्रंथियों में सूजन (Swelling in lymph glands)

उपचार (Treatment)

1. रोगी को एन्टिबायोटिक दी जाती हैं जैसे- cefotaxime, erythromycin, ciprofloxacin, amikacin आदि।

2. रोगी को एन्टिपायरेटिक दवाईयां दी जाती हैं जैसे- ibuprofane, acetaminophen आदि।

3. गंभीर स्थिति में सर्जरी द्वारा टॉन्सिल्स को काट कर हटा दिया जाता है इसे tonsillectomy कहा जाता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

शल्य-क्रिया से पूर्व देखभाल (Pre-operative Nursing Care) -

1. रोगी व परिवारजनों से लिखित सहमति प्राप्त करें।

2. रोगी को सर्जरी के लाभ व जटिलताओं के बारे में बताना चाहिए।

3. रोगी के सभी जैविक चिन्ह जांचने चाहिए।

4. O.T. में भेजने से पूर्व रोगी को तैयार करना चाहिए व डॉक्टर द्वारा निर्देशित दवाईयां दी जानी चाहिए।

शल्य-क्रिया के बाद देखभाल (Post-operative Nursing Care) -

1. रोगी के जैविक चिन्ह की नियमित अंतराल पर जांच की जाती है।

2. ऑपरेशन के बाद रोगी को पाश्विक स्थिति (lateral position) में लिटाना चाहिए ताकि स्राव व रक्त मुंह एवं नाक द्वारा बाहर निकल सके।

3. Postoperative order में डॉक्टर द्वारा निर्देशित antibiotic दवाईयां नियमित रूप से रोगी को दी जानी चाहिए।

4. रोगी को आवश्यकतानुसार अन्य दवाईयां दी जाती हैं जैसे- antiemetics, antipyretics, antacids आदि।

8. रोगी को आरामदायक स्थिति व शांत वातावरण में रखना चाहिए।

9. रोगी को नियत समय पर डॉक्टर को दिखाने आने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

Answer- Tonsillitis: Inflammation and swelling caused by infection in the tonsils located in the back part of the oral cavity (oropharynx) is called tonsillitis.

Causes

1. By Hemolytic streptococci
2. By Staphylococci
3. By Pneumococci
4. By Influenza Virus
5. Upper respiratory tract infection
6. Polluted air and food

Clinical Features

1. Sore throat
2. Pain in swallowing (Dysphagia)
3. Fever
4. Bodyache
5. White discharge on the tongue (White coated tongue)
6. Chills and shivering
7. Swelling in lymph glands of the neck

Treatment

1. Antibiotics are given to the patient like cefotaxime, erythromycin, ciprofloxacin, amikacin etc.

2. Antipyretic medicines are given to the patient like ibuprofen, acetaminophen etc.

3. In serious conditions, the tonsils are removed by surgery, this is called tonsillectomy.

Nursing Management

Pre-operative Nursing Care -

1. Obtain written consent from the patient and family members.

2. The patient should be told about the benefits and complications of surgery.

3. All biological signs of the patient should be checked.

4. O.T. Before sending the patient to the hospital, he should be prepared and given medicines as directed by the doctor.

Post-operative Nursing Care -

1. The biological signs of the patient are checked at regular intervals.

2. After the operation, the patient should be made to lie in the lateral position so that secretions and blood can flow out through the mouth and nose. Could get out.

3. Antibiotic medicines should be given to the patient regularly as directed by the doctor in post-operative order.

4. Other medicines are given to the patient as per requirement like antiemetics, antipyretics, antacids etc.

8. The patient should be kept in a comfortable position and calm environment.

9. The patient should be encouraged to visit the doctor at the appointed time.